

दुर्गाचालीसा

॥ श्रीः ॥

दुर्गाचालीसी ।

जिसमें
दुर्गाकी स्तुति, कुंडलिया और
उद्धव-गोपीसंवाद भी हैं ।

मुद्रक एवं प्रकाशक:
खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई-४०० ००४

संस्करण- सन् २००० सम्वत् २०५७

मूल्य ४ रुपये मात्र

Printed by Shri Sanjay Bajaj for M / s Khemraj Shrikrishnadass proprietors Shri Venkateshwar press Mumbai 400 004. at their Shri Venkateshwar press. 66, Hadapsar Industrial Estate, Pune-411013.

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ

दुर्गाचालीसी

प्रारम्भ ।

नमोनमोदुर्गेसुखकरनी ॥ नमो
नमोअंबेदुखहरनी ॥ १ ॥ निरं
कारहैज्योतितुम्हारी ॥ तिहूँलो
कफैलीउजियारी ॥ २ ॥ शशि
लिलाटमुखमहाविशाला ॥ ने

त्रलालभ्रुकुटीविकराला ॥ ३ ॥ रू
पमातुकोअधिकसुहावै ॥ दरश
करतजनअतिसुखपावै ॥ ४ ॥
तुमसंसारशक्तिलौकीना ॥ पा
लनहेतअन्नधनदीना ॥ ५ ॥ अ
न्नपूरणाहैजगपाला ॥ तुमहीं
आदिसुंदरीबाला ॥ ६ ॥ प्रलयका
लसबनाशनहारी ॥ तुमगौरी
शिवशंकरप्यारी ॥ ७ ॥ शिवयो
गीतुम्हरेगुणगावैं ॥ ब्रह्माविष्णु
तुम्हेंनितध्यावैं ॥ ८ ॥ रूपसर

स्वतिकातुमधारा ॥ दे सुबुद्धिऋ
षिमुनिनउबारा ॥ ९ ॥ धरारूप
नरसिंहकोअंबा ॥ परगटभईफा
डकेखंबा ॥ १० ॥ रक्षाकरप्रह
लादबचायो ॥ हिरण्याक्षको
स्वर्गपठायो ॥ ११ ॥ लक्ष्मीरू
पधरोजगमाहीं ॥ श्रीनारायण
अंगसमाहीं ॥ १२ ॥ क्षीरसिंधु
मेंकरतविलासा ॥ दयासिंधुदी
जैमनआसा ॥ १३ ॥ हिंगला
जमेंतुम्हींभवानी ॥ महिमाअ

मितनज़ातबखानी ॥ १४ ॥ मा
तंगीधूमावतिमाता ॥ भुवनेश्व
रिबगलासुखदाता ॥ १५ ॥ श्री
भैरवताराजगतारणि ॥ छिन्नंभा
लभवदुःखनिवारणि ॥ १६ ॥ के
हरिवाहनसोहभवानी ॥ लंगुर
वीरचलतअगवानी ॥ १७ ॥ क
रमेंखप्परखड्गविराजै ॥ जाको
देखकालडरभाजै ॥ १८ ॥ सो
हैऔरअस्त्रातिरशूला ॥ जातेउठ
तशत्रुहियशूला ॥ १९ ॥ नमो

कोटमैंतुमाहिंविराजत ॥ तिहूँलो
कमेंडंकाबाजत ॥ २० ॥ शुंभनि
शुंभदैत्य तुममारे ॥ रक्तबीज
शंखंनसंहारे ॥ २१ ॥महिषासुर
नृपअतिअभिमानी ॥ जेहिअ
घभारमहीअकुलानी ॥ २२ ॥
रूपकरालकालिकोधारा ॥ से
नसहिततुमतिहसंहारा ॥ २३ ॥
परागाढसंतनपरजबजब ॥ भं
ईसहायमाततुमतबतब ॥ २४ ॥
आभापुर अरु वासवलोका ॥

तव महिमा सबकहैंअशोका ॥
॥२५॥ बालामेंहैज्योतितुम्हारी॥
तुम्हेंसदापूजैंनरनारी ॥ २६ ॥
प्रेमभक्तिसे जो यश गावैं ॥
दुखदारिद्रनिकटनहिंआवैं॥ २७॥
ध्यावैतुम्हेंजुनरमनलाई ॥ ॥
जन्ममरणतेसोछुटजाई ॥ २८॥
योगीसुरमुनि कहतपुकारी ॥
योनहोइ विनशक्ति तुम्हारी ॥
॥ २९ ॥ शंकरआचारजतपकी
नो ॥ कामक्रोधजीतीसबली

नो ॥ ३० ॥निशदिनध्यानधरोशं
करको ॥ काहुकालनहिंसुमिरो
तुमको ॥ ३१ ॥ शक्तिरूपकोम
रमनपायो ॥ शक्तिगइतबमनप
छितायो ॥ ३२ ॥ शरणागत
हकीर्तिबखानी ॥ जैजैजैजग
दंबभवानी ॥३३ ॥ भईप्रसन्न
आदिजगदंबा ॥ दईशक्तिनहिं
कीनाविलंबा ॥ ३४ ॥ मोकोमा
तुकष्टअतिघेरो ॥ तुमबिनकौ
नहरैदुखमेरो ॥ ३५॥ आशातृ

ष्णानिपटसतावै ॥ रिपुमूरख
मोहिंअतिडरपावै ॥ ३६ ॥ शत्रु
नाशकीजैमहरानी ॥ सुमिरोंइ
कचिततुम्हैंभवानी ॥ ३७ ॥ क
रौकृपाहेमातुदयाला ॥ ऋद्धिसि
द्धिदैकरहुनिहाला ॥ ३८ ॥ ज
बलगजियोंदयाफलपाऊं ॥ तु
म्हरोयशमैंसदासुनाऊं ॥ ३९ ॥
दुर्गांचालीसीजोगावै ॥ सबसु
खभोगपरमपदपावै ॥ ४० ॥ दे
वीदासशरणनिजजानी ॥ कर

हुकृपाजगदंबभवानी ॥ ४१ ॥
इति श्रीदुर्गाचालीसी समाप्ता ।

अथ
श्रीदुर्गाजीकी स्तुति.

दोहा ।

विघ्नहरण मंगलकरण, लम्बोदर गजदंत ॥ ॥ बसहु द्वारकाके हृदय, वरणों ग्रंथ अनंत ॥

सवैया ।

वेद पुराण सदा निगमागम, गावत हैं तुम्हरो यश माई ॥

शंभु गणेश शुरेश धनेश धरैं तेरो ध्यान समाधि लगाई ॥ और जो नारद शारद शेष नहीं महिमा तुम्हरी लखिपाई ॥ द्वारिका ग्रंथ बनावत हैं जगदम्ब कृपा करि होउ सहाई ॥ समाप्त ॥

कुण्डलिया,

कृष्ण राधिकाकी कथा, वरणों शीश नवाय ॥ सज्जनसे यह प्रार्थना, कृपा करो हरषाय ॥ कृपा करो हरषाय बसो गुरु

हृदय हमारे ॥ वर्णत बोध वि
लास प्रथमको भाग पुकारे ॥
विन श्रम नर तरिजाय होय वै
कुंठनिवासी ॥ कहै द्वारिका क
टाहिं सकल विनश्रम चौरासी ॥
समाप्त.

अथ उद्धवगोपीसंवाद ।
सोरठा ।
लम्बोदर गजदंत, विघ्नहरण मं
गलकरण ॥ वर्णों ग्रंथ अनंत,
बसहु द्वारिकाके हृदय ॥ १ ॥

गजल ।

राग काफी ।

जाना जरा जाना जरा जाना जरा
जाना ॥ १ ॥ जाना जरा जाना
जरा जाना को समझाना ॥ २ ॥
कुबिजाके घर बारा फूली तापर
भ्रमर लुभाना ॥ ३ ॥ खाय खाय
कुंजनमें माखन अब भेजत पर
वाना ॥ ४ ॥ लगो बसंत संत है

छाये करत अपनो मनमाना ॥
॥ ५ ॥ बारी उमरि तब तौं सखि
यनकी जोबन हरियाना ॥ ६ ॥
ऊधो साथ आपने लाना दरश
परश करवाना ॥ ७ ॥ कहे
द्वारिका परसाद कृपानिधि हमको
गले लगाना ॥ ८ ॥ समाप्त ॥

पुस्तकें मिलने के स्थान

१) खेमराज श्रीकृष्णदास,
श्रीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
खेतवाडी, मुंबई - ४०० ००४.

२) खेमराज श्रीकृष्णदास,
६६, हडपसर इण्डस्ट्रिअल इस्टेट
पुणे - ४११ ०१३.

३) गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास
लक्ष्मीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस,
व बुक डिपो,
अहिल्याबाई चौक, कल्याण
(जि. ठाणे - महाराष्ट्र)

४) खेमराज श्रीकृष्णदास,
चौक - वाराणसी (उ.प्र.)

मुद्रक एवं प्रकाशकः

खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, बम्बई-४०० ००४

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS